समाचार

हमीदिया गर्ल्स डिग्री कॉलेज के उर्दू विभाग में नेशनल काउंसिल फॉर प्रमोशन ऑफ उर्दू लैंग्वेज, नई दिल्ली द्वारा आयोजित 'अकबर इलाहाबादी मेमोरियल लेक्चर' के अंतर्गत 'शम्सुर्रहमान फारुक़ीः शख्स, शायर और नक़्क़ाद' पर 20.03.2021 को समय 11:00 से 1:00 बजे तक बेगम खुर्शीद ख्वाजा हॉल में व्याख्यान हुआ। मुख्य वक्ता प्रोफेसर सिराज अजमली उर्दू विभाग, अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी ,अलीगढ़ ने शम्सुर्रहमान फारुकी पर अपना विस्तृत व्याख्यान प्रस्तुत किया उन्होंने उनके व्यक्तित्व एवं शायरी पर गहन प्रकाश डाला, इस व्याख्यान की प्रसंगिकता को बताते हुए उन्होंने कहा कि यादगारी व्याख्यान का शुभारंभ करने वाले शम्सुर्रहमान फारुकी थे जिन्होंने सबसे पहले यादगारी व्याख्यान अकबर इलाहाबादी के ऊपर दिया वह अपने नज़रिया में आधुनिकता वादी थे।। उर्दू साहित्य के कवि, आलोचक और सिद्धांत कार थे ,उन्होंने साहित्यिक प्रशंसा के नए मॉडल तैयार किए उन्होंने साहित्यिक आलोचना के पश्चिमी सिद्धांतों को आत्मसात किया और फिर उन्हें उर्दू साहित्य में लागू किया ।वह उदारवादी व्यक्तित्व के मालिक थे ,लोगों के साथ मिलना जुलना, एतराफ़ करना ,उनकी खासियत थी। सम्मानित वक्ताओं में प्रोफेसर अहमद महफूज़ उर्दू विभाग, जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली ने अपने वक्तव्य में कहा की शम्सुर्रहमान फ़ारूक़ी जैसी हस्ती की याद में लेक्चर होना सामूहिक रूप से हमारे लिए गौरव की बात है क्योंकि वह इलाहाबाद शहर से जुड़े हुए थे और पूरे दुनिया में उनकी पहचान हुई, वह वास्तविक रूप से विद्वान थे। अकबर इलाहाबादी की शायरी की प्रशंसा उनकी जिंदगी में ही शुरू हो गया था। बीसवीं सदी में अकबर के इंतकाल के बाद उनके ऊपर व्यंग्य शायर का लेवल लग गया ।इस तरह उन्हें कम दर्जे का आंका जाने लगा लेकिन अकबर की सही कद्र-ओ- कीमत करने वाला शायर और कोई नहीं शम्सुर्रहमान फारुकी थे उन्होंने उनको व्यंग्य दुनिया के आला तरीन शायरों में रखा है उन्होंने बताया कि अकबर केवल व्यंग्य शायरी के लिए नहीं जाने जाते बल्कि उनकी प्रासंगिकता हमारी मशरिकी तहजीब व रवायत की खूबियों को महसूस कर शायरी में पिरोना है । मग़रिबी तहजीब, मशरिक़ी तहजीब को कहीं से भी छू नहीं सकती उन्होंने अकबर की शायरी के बारे में दुनिया को सही सूरते हाल से रोशनाश कराया। उर्दू की क्लासिक शायरी को भी उन्होंने क्लासिक शायरी के उसूल के साथ दिखाने का काम भी किया ,और इसके लिए उन्होंने तर्क दिए और क्लासिकल शायरी की प्रासंगिकता को बताया एवं प्रोफेसर ए.ए.फातमी पूर्व विभागाध्यक्ष उर्दू विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय प्रयागराज ने अपने व्याख्यान में कहा कि शम्सु र्रहमान फारुकी का आदबी सफर 50 से 60 साल तक था वह साहित्य की कई धाराओं से जुड़े थे एक सिद्धांत कार भी थे। उनके निबंध मीर, गालिब और इकबाल के बाद सबसे ज्यादा अकबर इलाहाबादी पर ही था ।वह अकबर को 5,6 बड़े शायरों में शामिल करते हैं उन्होंने उर्दू शायरी की पहचान इश्किया या सूफियाना शायरी से अलग, अकबर की शायरी को एक बड़ा दर्जा देते हैं ,उन्होंने सांस्कृतिक ,ऐतिहासिक, सामाजिक एवं राजनैतिक सभी पहलुओं पर लिखा ।19वीं सदी के संक्रमण

कालीन समय जब कुछ जा रहा था और कुछ आ रहा था ,को समझने के लिए उस वक्त के माहौल की समझ रखना जरूरी है। तभी उर्दू शायरी को समझ सकते हैं ।वह एक आधुनिकता वादी कवि थे उनको एक बड़े विद्वान के रूप में स्थापित करने के लिए तार्किक रूप से समझना जरूरी है ।प्रगतिशील कवियों ने अलग अलग तरीके से अपनी बात को रखा फारूखी साहब ने अपने मापदंड तय कर रखे थे उन्होंने कहा कि आधुनिकता आज भी कायम है बस उसके तरीक़े बदल गए हैं। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रोफेसर शबनम हमीद विभागाध्यक्ष उर्दू विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय ने किया, उन्होंने कहा शम्सुर्रहमान फारुकी ने अपने शायरी के जरिए से पर्यावरण को भी दर्शाया है। छोटों को हौसला देना और उसको आगे बढ़ाना उनके व्यक्तित्व में था। उनके साथ का यादगार मंजर भावुकता के साथ प्रस्तुत किया और उनके साहित्यिक सफर की संक्षिप्त रूपरेखा प्रस्तुत की।

प्राचार्या डॉ यूसुफ़ा नफीस द्वारा सभी अतिथियों का स्वागत किया गया। कॉलेज की प्रबंधक श्रीमती तज़ीन एहसानुल्लाह ने कार्यक्रम की सफलता के लिए शुभकामनाएं दी। कार्यक्रम का संचालन एवं धन्यवाद ज्ञापन श्रीमती नासेहा उस्मानी एसोसिएट प्रोफेसर उर्दू विभाग ,एचजीडीसी ने किया । उर्दू मैगजीन नक्शे -ए-नौ का 13वां संस्करण शम्सुर्रहमान फारुकी नंबर से निकला।